आईना

The Mirror of Heart

व्यंकटेश्वरा नन्द मिश्र

Sample Copy. Not For Distribution.

आईना

Sample Copy. Not For Distribution.

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-1-61813-508-7

Price: ₹ 185.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India

Sample Copy. Not For Distribution.

आईना

The Mirror of Heart

व्यंकटेश्वरा नन्द मिश्र

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

लेखक का जन्म १९७८ में हुआ है बचपन से ही कविताओ में रूचि थी और लेखन कार्य करते आ रहे है पेशे से किसान और अधिवक्ता है यह उनकी पहली पुस्तक है

इस पुस्तक में प्यार है दर्द है भक्ति है सामाजिक विचार धराये है स्वास्थ्य के बारे में भी है .काव्य प्रेमियों के लिए सभी तरह के काल्पनिक पंक्तिया है उम्मीद है पाठको को पसंद आएगी

Sample Copy. Not For Distribution.

मिटते हुये अरमान देखता हूँ रोज
गिरते हुये इनसान देखता हूँ रोज
दर्द और बेकरार जिंदगानी से
लिपटे हुये गिरेबान देखता हूँ रोज

आज कल निभाता है कौन वादे
बिकते हुए ईमान देखता हूँ रोज
लगी आग कमरों में रंजिश की
जलते हुये मकान देखता हूँ रोज

ये जिंदगी सुलझी न लगी कभी
उलझे हुए सवाल देखता हूँ रोज
मत जलाओ दिया प्रेम का साथी
उठते हुये तूफ़ान देखता हूँ रोज

मिटते हुये अरमान देखता हूँ रोज
गिरते हुये इनसान देखता हूँ रोज

Sample Copy. Not For Distribution.

ऑखो से बहता हुआ आशियाना भुला पाए न हम
फूलों सा बिखरा हुआ आशियाना भुला पाए न हम
उनका हसंना और मुस्कुराना भुला पाए न हम

कभी होश में कभी जोश में एक दूसरे की आगोश में
रातों में जगना और जगाना भुला ना पाए हम

मिलते थे अक्सर दो दिल–ऑखे भी रहती थी बोझिल
हसीं प्यार का वो हसीं जमाना भुला पाए न हम

हम किसी के इंतजार में–वह किसी का इंतजार में
किसी का रूठना किसी का मनाना भुला पाए न हम

जीता हूं नाम ले के यार का–उतरा नहीं नशा प्यार का
नशीली–नशीली ऑखों का मैखाना भुला पाए न हम

मिट जाए मेरा वजूद भी–दुश्मनी के बावजूद भी
गलियों मे तेरी आना जाना भुला पाए न हम

फूलों से बिखरा हुआ आशियाना भुला पाए न हम
उनका हसंना व मुस्कुराना भुला पाए न हम

Sample Copy. Not For Distribution.

ये नसीहत है हम सभी के लिए
वक्त रूकता नहीं आदमी के लिए

हर कोई है किसी न किसी का
आसमां भी तो है बना जमीं के लिए

है करीब जो वही जिंदगी है
इंतजार कैसा अजनबी के लिए

महफ़िल में गैर ही गैर हैं
अफ़सोस है उसकी कमीं के लिए

कौन जानें कल होता है क्या
जीना है जिंदगी बस अभी के लिए

ये नसीहत है हम सभी के लिये
वक़्त रूकता नहीं आदमी के लिए

Sample Copy. Not For Distribution.

दर्द समझो हर खुशी मिल जाएगी
ज़िंदगी को नई ज़िंदगी मिल जाएगी

मिलने मिलाने की कोशिश तो करिए
आसमां से फिर जमीं मिल जाएगी

यादकर कुछ ऐसा कि आंसू निकलें
इन ऑखों को फिर नमी मिल जाएगी

चीरकर सीना पत्थरों का आगे बढ़ो
समंदर से फिर नदी मिल जाएगी

मत सोच कि बस तू है एक फ़रेबी
हर एक में यह कमी मिल जाएगी

दौर ही चल पड़ा है अब रंजिशों का
कत्ले कहानी हर कहीं मिल जाएगी

दर्द समझो हर खुशी मिल जाएगी
ज़िंदगी को नई ज़िंदगी मिल जाएगी

Sample Copy. Not For Distribution.

आसमां शहर का धुएं से नहा रहा है
लगता है फिर कोई खत जला रहा है

उनकी नहीं किसी परिन्दे की होगी आहट
ए दिल सोने दे मुझे क्यों जगा रहा है

मालुम है जब टूट के बिखर जाते हैं
फिर तू क्यों ऐसे सपनें सजा रहा है

क्या ख़ूब रिश्ता निभाया है तुमने साथी
जानता हूँ सब मुझे क्या बता रहा है

दुश्मनों के दिल बदले बात क्या है
सारा शहर मेरा जनाजा उठा रहा है

आसमां शहर का धुएं से नहा रहा है
लगता है फिर कोई खत जला रहा है

Sample Copy. Not For Distribution.

मन का ये आईना बदलता नहीं
बिना प्रेम के जग ये चलता नहीं

लगन जो न होती तो सत्यम न होता
पूरब से सूरज निकलता नहीं

ममता जो न होती तो शिवम् न होता
यशोदा के घर कृष्ण पलता नहीं

चाहत न होती तो सुन्दर न होता
रत्ना के पीछे तुलसी जलता नहीं

मन का ये आईना बदलता नहीं
बिना प्रेम के जग ये चलता नहीं

Sample Copy. Not For Distribution.

छोटी छोटी बातों पे हादसे हर घरो में होतें हैं
अब ज़माना वो है जहां दिल पत्थरों के होते हैं

क़दर करते हैं आफ़त में कुदरत की सिर्फ लोग
बांकी वक़्त गुरूर भरे नग़्में हर एक लवों पे होते हैं

साथ क्यों नहीं देते उनका जो तन्हा हैं लोग
सभी कोई कभी न कभी रू–ब–रू ग़मों से होते हैं

खुदा ने खींची है कहां लकीर दिखाओं आप लोग
क्यों क़त्ल फिर बेवजह सरहदों पे होते हैं

छोटी छोटी बातों पे हादसे हर घरो में होतें हैं
अब ज़माना वो है जहां दिल पत्थरों के होते हैं

Sample Copy. Not For Distribution.

गुलशन के गुल से हंसी हो सनम तुम
मेरा आसमान मेरी जमीं हो सनम तुम

ऑखो में तुम हो राहो में तुम हो
सांसो मे तुम हो यादों मे तुम हो
मेरी इन पलकों में बसी हो सनम तुम
मेरा आसमान मेरी जमीं हो सनम तुम

उदास–उदास आंखें लगती हैं
बिखरी जुल्फ़े कुछ कहती हैं
किसी के इंतजार मे जगी हो सनम तुम
मेरा आसमान मेरी जमीं हो सनम तुम

तुम हो तो सबकुछ पास में
तुम नहीं तो, कुछ नहीं पास में
मेरे ज़िंदगी की हर कमी हो सनम तुम
मेरा आसमान मेरी जमीं हो सनम तुम

गुलशन के गुल से हंसी हो सनम तुम
मेरा आसमान मेरी जमीं हो सनम तुम

Sample Copy. Not For Distribution.

तमाम उम्र सकूंन खोजते रहे हम
मिलता है कहॉ चैन सोचते रहे हम

पता नहीं कब चले गये तुम
कमरे की दीवारों से बोलते रहे हम

कहती है सीनें में पड़ी दरारें
दिल में कील प्यार की ठोंकते रहें हम

दोस्तों की शक्ल में दुश्मनों से
दिल में छुपाए ऱाज खोलते रहे हम

जला दिया आशियां खुद तुमनें
बेवजह तुफानों को रोकते रहे हम

नफ़रतों के साये में घुट–घुट
ज़िंदगी भर खुद को कोसते रहे हम

तमाम उम्र सकूंन खोजते रहे हम
मिलता है कहॉ चैन सोचते रहे हम

Sample Copy. Not For Distribution.

जहॉ में खूबसूरत चेहरों की कमी नहीं है
मगर तुमसे खूबसूरत एक भी नहीं है

कशिश है ऑखों में गज़ब की जानम
देखा है तुम्हें जबसे धड़कन थमी नहीं है

लगती है चॉदनी चॉद की फीकी–फीकी
मतलब ये कि चॉद भी तुमसे हंसी नहीं है

न वादा है न कसम खाऊंगा फिर भी
हक़ीकत इश्क़ मेरा कोई दिल्लगी नहीं है

सोचती है इश्क़ की हर मजलिश
कभी कुदरत ने ऐसी रचना रची नहीं है

आशियां बना लो बेखौफ इस दिल में
हम दीवाने है तुम्हारे कोई अजनबी नहीं है

जहॉ में खूबसूरत चेहरों की कमी नहीं है
मगर तुमसे खूबसूरत एक भी नहीं है

Sample Copy. Not For Distribution.

Get Complete Book
At Educreation Store
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

आईना

आसमा शहर का धुएं से नहा रहा है
लगता है फिर कोई खत जला रहा है

आपकी आँखों में थोड़ी सी जगा चाहिए
जमाना बेवफा है मुझे आपकी वफा चाहिए

छोटी छोटी बातो में हादसे हर घरो में होते है
अब जमाना वो है जहां दिल पत्थरों के होते है

तमाम उम्र सकूं खोजते रहे हम
मिलता है कहा चैन सोचते रहे हम

ख्वाब इस तरह बिखर जायेगे सोचा नहीं था
मिलकर हकीकतो से डर जायेगे सोचा नहीं था

ए नसीहत है हम सभी के लिए
वक्त रुकता नहीं आदमी के लिए

लेखक से संपर्क हेतु :
wyenketeshmishra@gmail.com

EDUCREATION
PUBLISHING (Delhi)
www.educreation.in

Also available as an eBook
POETRY
ISBN 978-1-61813-508-7
9 781618 135087 >

Sample Copy. Not For Distribution.